12. इस्लाम धर्म

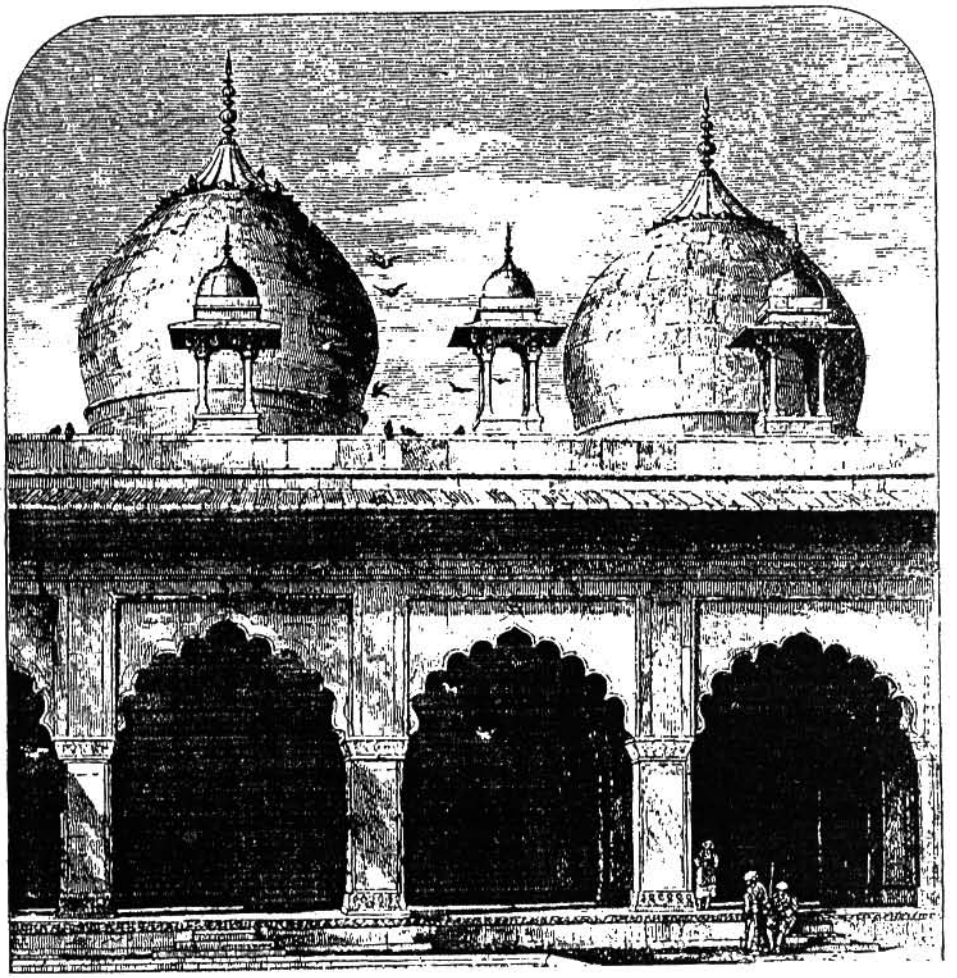

पिछले पाठ में हमने यह देखा कि हिन्दू धर्म कैसे बना। अब हम अपने देश के एक और महत्वपूर्ण धर्म, इस्लाम धर्म के बारे में कुछ पढ़ें। यह चित्र है एक मस्जिद के आंगन और दीवार का जिसकी ओर मुंह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं।

इस्लाम धर्म को मानने वाले दिन में पांच बार ईश्वर, यानी अल्लाह से प्रार्थना करते हैं। इसे नमाज़ पढ़ना कहा जाता है। अगर तुम्हारे आसपास कोई मस्जिद है तो तुम्हें दिन में पांच बार उसकी मीनार से यह आवाज़ गूंजती हुई सुनाई देगी– "अल्लाह ओ अकबर....." यानी अल्लाह महान है। इस आज़ान (यानी पुकार) को सुनते ही मुसलमानों को पता चलता है कि यह प्रार्थना करने का समय है। वे जहां भी हों, ज़मीन साफ करके उस पर एक साफ कपड़ा बिछाते हैं और मक्का शहर की दिशा में मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं। हर शुक्रवार को किसी गांव या शहर के सब मुसलमान मस्जिद में इकट्ठा होकर नमाज़ पढ़ सकते हैं।

तुमने ध्यान दिया होगा कि मस्जिद में किसी देवी-देवता की मूर्ति नहीं होती। एक बड़ा आंगन होता है

जिसमें सब मुसलमान इकट्ठा हो कर नमाज़ पढ़ सकें। पश्चिम की तरफ जिस ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ी जाती है एक दीवार होती है। इस्लाम धर्म में मूर्ति पूजा बिलकुल मना है। ऊंच-नीच, छुआछूत का भेद-भाव करना भी बहुत गलत माना गया है। यह इस बात से भी स्पष्ट होता है कि मस्जिद में सभी मुसलमान एक साथ कतार में खड़े होकर नमाज़ पढ़ते हैं।

इस्लाम धर्म में लोग यह मानते हैं कि एक ही ईश्वर है अल्लाह। हम सब उसके बंदे हैं। और हज़रत मोहम्मद अल्लाह का पैगाम यानी संदेश लाने वाले पैगम्बर हैं। हज़रत मोहम्मद ने जब अल्लाह का पैगाम (संदेश) लोगों को बताना शुरू किया, तब इस्लाम धर्म की शुरुआत हुई। ऐसा कब हुआ था और कहां हुआ था?

हज़रत मोहम्मद

यह अरब देश की बात है। वहां के मक्का नामक शहर में सन् 571 में हज़रत मोहम्मद का जन्म हुआ था। उस समय अरब में अनेक छोटे-छोटे कबीले थे जो लगातार एक दूसरे से लड़ते रहते थे। ये लोग बहुत सारे देवी-देवताओं को मानते थे। मोहम्मद इन लोगों के बीच यह संदेश देने लगे कि ईश्वर एक है। बहुत सारे देवी-देवताओं और उनकी मूर्तियों की पूजा करना गलत है। एकमात्र ईश्वर, अल्लाह, की सीधे और सरल तरीके से प्रार्थना करनी चाहिए। मोहम्मद ने कहा अल्लाह को मानने वाले सब लोग बराबर हैं और एक हैं। इसलिए उन्हें आपस में लड़ना झगड़ना नहीं चाहिए।

मुसलमान मानते हैं कि मोहम्मद के माध्यम से अल्लाह ने जो संदेश लोगों के लिए भेजे वे कुरान नाम की किताब में लिखे हुए हैं। कुरान मुसलमानों का धार्मिक ग्रंथ है।

शुरू में मक्का शहर के कई लोगों ने मोहम्मद की बातों का विरोध किया था। यहां तक कि मोहम्मद को मक्का छोड़कर दूसरे शहर मदीना जाना पड़ा था। पर धीरे-धीरे अरब के सारे कबीले मोहम्मद की बातें मानने लगे।

अरब देश में शुरू होकर इस्लाम धर्म दुनिया के कई देशों में फैला। बहुत से लोग मुसलमान बने। सन् 1000 तक यह धर्म कहां-कहां फैला था नक्शा नं. 1 में देखो।

दुनिया भर के मुसलमान चाहे वो किसी भी देश के हों, अल्लाह को ही अपना ईश्वर मानते हैं और हज़रत मोहम्मद को उनका पैगम्बर मानते हैं।

सन् 1000 में इस्लाम धर्म इन जगहों में फैला था

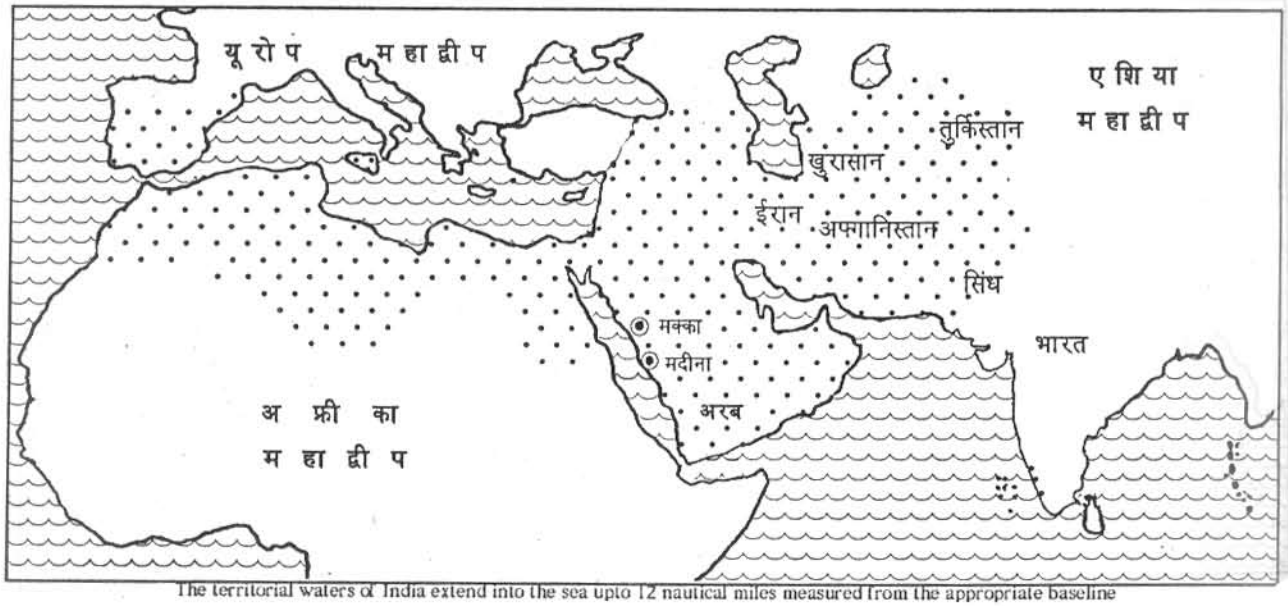

The territorial waters of India extend into the sea upto 12 nautical miles measured from the appropriate baseline

इस्लाम धर्म की प्रमुख बातें

एक ईश्वरः मुसलमानों का सबसे महत्वपूर्ण विश्वास है कि ईश्वर एक ही है और हज़रत मोहम्मद उसके संदेशवाहक हैं।

नमाज़ः हर मुसलमान को दिन में पांच बार नमाज़ पढ़ना होता है।

हजः हज़रत मोहम्मद के जीवन से जुड़ी जगहें, मक्का और मदीना दुनिया भर के मुसलमानों के लिए तीर्थ स्थल हैं। हर साल लाखों मुसलमान अरब देश में मक्का-मदीना का हज (यानी तीर्थ) करने जाते हैं।

रोज़ाः इस्लाम धर्म की रीतियों में एक और महत्वपूर्ण रीति है, एक महीने का रोज़ा (यानी उपवास) रखना। जिस माह में रोज़े रखे जाते हैं उसे रमज़ान का महीना कहते हैं। रमज़ान के महीने में मुसलमान सुबह सूरज उगने से पहले खाना खा लेते हैं और फिर सूर्यास्त होने पर मस्जिद से गोला फूटता है ताकि लोग जान जाएं कि रोज़ा तोड़ने का समय हो गया। इस महीने के आखिर में ईद का त्यौहार मनाया जाता है।

दानः कुरान के अनुसार मुसलमानों के लिए एक और नियम बहुत ज़रूरी है। नियम है कि हर मुसलमान को अपनी धन-संपत्ति का एक बटा चालीसवां हिस्सा ग़रीब लोगों में बांट् देना चाहिए। कुरान में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि अमीर लोग पैसे की होड़ में न लगे रहें।

ये इस्लाम धर्म की पांच प्रमुख बातें हैं। उन्हें एक-एक करके बताओ।

इस्लाम धर्म भारत आया

इस्लाम धर्म की शुरुआत अरब देश में हुई थी। आओ देखें कि यह धर्म भारत कैसे आया।

कई अरब व्यापारी जो इस्लाम धर्म को मानते थे, भारत के पश्चिमी तट पर व्यापार करने आते थे। वहां के बंदरगाहों में वे छोटी-छोटी बस्तियां बनाकर बसे। राजाओं ने उन्हें बसने में मदद की। उन्हें अपने घर, गोदाम और मस्जिद बनाने के लिए ज़मीन दी। इन व्यापारियों के प्रभाव से आस-पास के कई लोग मुसलमान बने।

ईद मिलन

भारत के पश्चिम में इस्लाम धर्म एक और घटना के कारण आया। मोहम्मद बिन कासिम ने जब सिंध पर अपना राज्य बनाया तो उसके साथ कई अरब लोग सिन्ध और मुल्तान में बसे। उनके कारण वहां के लोगों को इस नए धर्म के बारे में पता चला।

भारत के उत्तरी हिस्सों में इस्लाम धर्म की जानकारी ईरानी शरणार्थियों के जरिए आई। सन् 900 के लगभग, ईरान देश पर तुर्क कबीले हमले कर रहे थे। इन हमलों से बचने के लिए कई ईरानी लोग भारत आए। उनमें कई लोग कारीगर थे, कई लोग सन्त थे। कुछ सिपाही भी शरण लेने वालों में थे। राय राणाओं ने इन शरणार्थियों को अपने राज्य में बसाया। राय राणाओं की सेनाओं में कई ईरानी सिपाही शामिल कर लिए गए। ये ईरानी लोग मुसलमान थे। इनके संपर्क में आकर बहुत से लोगों को इस्लाम धर्म के बारे में मालूम पड़ा।

सन् 1190 के बाद भारत में तुर्क लोगों ने राज्य बना लिया। इस समय तक आते-आते तुर्क लोग भी इस्लाम धर्म मानने लगे थे। तुर्कों के साथ बड़ी संख्या में ईरानी, अफगानिस्तानी, खुरासानी लोग भी भारत आ कर बसे।

सन् 1210 के करीब जब मंगोल नाम के कबीलों ने खुरासान, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान के राज्यों को हरा कर उनके शहर नष्ट कर डाले तब मंगोलों से बचने के लिए वहां के बहुत से लोग भारत आए।

इस्लाम धर्म मानने वाले कौन-कौन लोग भारत आए और क्यों आए- सूची बनाओ।

ये लोग अपने साथ अपने यहां के रीति-रिवाज़ व धर्म (जो कि इस्लाम धर्म था) तो साथ लाए ही पर अपने हुनर, पहनावा, पकवान भी लेकर आये थे। उनके साथ उठने-बैठने मिलने-जुलने से भारत के लोगों ने उनकी कई बातें सीखीं और अपनाईं। तुम पायजामा कुर्ता या फिर सलवार कमीज़ पहनते होगे। तुर्क-ईरानी लोगों के आने से पहले भारत में लोग आमतौर पर इस तरह के सिले हुए कपड़े नहीं पहनते थे। तब तो धोती या साड़ी ही पहनते थे। पायजामा-कुर्ता, सलवार-कमीज़- इनका चलन तुर्क-ईरानी लोगों से सीख कर ही हुआ।

तुम हलवा या गरम-गरम समोसे व कचोड़ी तो चटकारे लेकर खाते होगे। इन पकवानों का चलन भी तुर्क-ईरानी लोगों के आने के बाद ही हुआ। ईरानी व तुर्क लोगों ने ऐसे पकवान बनाने के तरीके और कपड़े सिलने के तरीके यहां के लोगों को सिखाये।

कागज़ बनाना

चरखे से सूत कातना

ईरानी व ईराकी कारीगरों ने इमारत बनाने के कुछ नए तरीके यहां के कारीगरों को सिखाये- ये क्या तरीके थे तुम आगे के पाठ में पढ़ोगे।

भारत में पुराने समय में किताबें किस पर लिखी जाती थीं क्या तुम्हें मालूम है? पत्तों पर, पेड़ की छालों पर, रेशम के कपड़ों पर या फिर तांबे के पट्टों पर। उस समय यहां के लोग कागज़ बनाना नहीं जानते थे। कागज़ बनाने का तरीका ईरान के लोगों ने चीनियों से सीखा हुआ था। जब ईरानी लोग यहां आ बसे तो वे साथ में कागज़ बनाने का तरीका भी लाये। यहां भी कागज़ बनने लगा और कागज़ पर लिखा जाने लगा।

एक और चीज़ जो भारत के कारीगरों ने इन लोगों से सीखी - चरखे से सूत कातना। इससे पहले तकली से सूत काता जाता था जिसमें बहुत समय लगता था।

इस तरह इन लोगों के आने से देश-विदेश की कई बातें भारत में आईं। भारत के लोगों ने ये सीखीं और उनके जीवन, रहन-सहन में कई बदलाव आये।

इस्लाम धर्म मानने वाले लोगों से भारत के लोगों ने जो चीज़ें सीखीं उनकी सूची बनाओ।

दूसरे देशों के मुसलमान भी भारत से कई बातें सीखने आते थे। अलबिरूनि भारत इसीलिए आया था। वह क्या-क्या सीखने आया था, याद करके बताओ।

लोगों के धर्म में और विचारों में भी बदलाव आए। भारत के बहुत से लोगों ने इस्लाम धर्म अपनाया और यहां भी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने, रोज़ा रखने जैसी बातों का चलन शुरू हुआ। भारत में जैसे बहुत सुन्दर मंदिर बन रहे थे, वैसे ही बहुत सुन्दर मस्जिदें भी बनीं।

तुम इस बात पर ध्यान दे चुके हो कि जब यहां के लोगों ने कोई नया धर्म अपनाया तो अपने पुराने धर्म की बहुत सी बातों को बनाए भी रखा। इसी तरह जब भारत के लोगों ने इस्लाम धर्म अपनाया तब अपने कई पुराने रीति-रिवाज़ों और रस्मों को बनाए रखा।

सूफी और भक्त सन्त

सन् 1100 से 1500 के बीच भारत में कई ऐसे सन्त हुए जिनका नाम तुम आज भी सुनते होगे। कबीर, नानक, दादू, रैदास, तुकाराम, रामानंद, बल्लभाचार्य। इनके दोहे तुम अपनी हिन्दी की पुस्तक में भी पढ़ते होगे।

लोगों की साधारण भाषा में लिखे और गाए गए ये गीत व दोहे ईश्वर के प्रति भक्ति भाव से भरे हैं। इनमें बहुत से ऐसे विचार हैं जिनको तब से लेकर अब तक लोग मानते आए हैं।

इन्हीं भक्त संतों की तरह कई मुसलमान संत भी थे जो सूफी संत कहलाते थे। अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, पंजाब के बाबा फरीद, दिल्ली के हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया बहुत जाने माने संत हुए थे। अजमेर में ख्वाजा साहब की मृत्यु तिथि पर मनाया जाने वाला उर्स (यानी त्यौहार) अपने देश के बड़े त्यौहारों में से एक है। हज़ारों हिन्दू व मुसलमान उर्स के दिन अजमेर जाते हैं और ख्वाजा जी की कब्र (यानी दरगाह) पर चादर चढ़ाते हैं, और मन्नत मांगते हैं।

इन भक्त संतों और सूफी संतों के विचार आपस में बहुत मिलते-जुलते थे। सूफियों ने इस बात पर जोर दिया कि सच्चे दिल से अल्लाह को प्रेम करना और अपने बुरे कामों पर पश्चाताप करना अल्लाह को पाने का सही तरीका है। धन दौलत व पद-सब त्याग कर ग़रीबों और लाचारों की सेवा करना ही धर्म है। वे कट्टर रस्मों के खिलाफ थे। वे ऐसी रस्मों पर ज़ोर देते थे जिनमें भक्त का मन अल्लाह की भक्ति में डूब जाए। सूफियों के डेरे पर झूम-झूम कर गीत गाने (यह कव्वाली हुआ करती थी) व नाचने की प्रथा थी।

सूफी संत बीच शहर में अमीर मुसलमानों के साथ न रहकर शहर के बाहर ग़रीबों की बस्तियों के पास रहते थे। उनके घरों में अमीर-ग़रीब, हिन्दू-मुसलमान सभी आते थे और साथ भोजन करते थे।

ये संत सुल्तानों से अपने आपको दूर ही रखते थे। उनका मानना था कि सुल्तान कुरान में बताए रास्ते पर न चलकर पाप और अत्याचार के तरीके अपनाते हैं। सूफियों के इस व्यवहार से बहुत लोग उनकी तरफ खिंचे चले आते थे, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान।

सूफियों की तरह ही भक्त-सन्तों ने भी लोगों के बीच यह भावना फैलायी थी कि ईश्वर को पाने के लिये सच्चे दिल से प्रेम करना ही एक मात्र तरीका है। उन्होंने भी आम लोगों की बोली में कई सुन्दर गीतों की रचना की जिसे भक्त लोग मगन होकर गाते थे। वे भी ऊंच-नीच, जात-पात के भेद-भावों के खिलाफ थे और कहते थे कि ईश्वर का भक्त चाहे वह ब्राह्मण हो या अछूत वे उसकी इज्ज़त करते हैं। ये संत सूफियों के विचारों से प्रभावित हुए और सूफी सन्त इनके विचारों से प्रभावित हुए। इनमें से कई संत कहने लगे कि हिन्दू और मुसलमान दोनों का ईश्वर एक है। ईश्वर को पाने का रास्ता भी एक समान है।

लल्ला देद कश्मीर की विधवा ब्राह्मण औरत थी। कई सूफी संत उसे अपना पीर या गुरु मानते थे। वो कहती थी–

"शिव सब जगह मौजूद है, सब में मौजूद है। फिर हिन्दू और मुसलमान में फर्क मत करो। अगर तुम समझदार हो तो अपने आप को समझो। यही ईश्वर की सही समझ है।"

इन सन्तों के विचारों की मदद से हिन्दू और मुसलमान लोगों ने एक दूसरे के धर्म की समान बातें समझीं। लोगों के बीच यह विचार बैठने लगा कि एक ही ईश्वर है– चाहे उसे अल्लाह, राम, शिव, विष्णु जैसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. इनके बारे में तुम क्या जानते हो– कुरान, मक्का-मदीना, हज, रमज़ान, नमाज़, पैगम्बर मोहम्मद, दरगाह और उर्स?
2. किन लोगों के साथ इस्लाम धर्म भारत आया?
3. सन् 1000 से पहले ईरानी लोग भारत क्यों आये? राय-राणाओं ने उन्हें किस तरह की सहायता दी?
4. भक्त और सूफी संतों के मन में ईश्वर को प्राप्त करने का तरीका एक सा था या फर्क था? वो क्या तरीका था?